भट्टारक सोमकीर्ति

जीवन-परिचय : पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रमुख साहित्यसेवियों में भट्टारक सोमकीर्ति का स्थान प्रमुख है। आप सदैव आत्मसाधना के साथ-साथ स्वाध्याय, साहित्यसृजन एवं शिष्यों के पठन-पाठन में प्रवृत्त रहते थे।

वे 10वीं शताब्दी के प्रसिद्ध भट्टारक रामसेन की परम्परा में होने वाले भट्टारक थे। इनके दादागुरु का नाम लक्ष्मीसेन और गुरु का नाम भीमसेन था।

1518 ई. में रचित एक ऐतिहासिक पट्टावली में इनको काष्ठसंघ का 87 वाँ भट्टारक बताया है। भट्टारक सोमकीर्ति का जन्म विक्रम संवत् 1500 के आस-पास होना चाहिए, क्योंकि ऐतिहासिक पट्टावली के अनुसार विक्रम संवत् 1518 में इन्हें भट्टारक पद प्राप्त हो चुका था।

रचना-परिचय : आचार्य सोमकीर्ति ने संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं में ग्रन्थ लिखे हैं। संस्कृत रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. सप्तव्यसनकथा : इसमें सात कथाओं के माध्यम से सात व्यसनों का दुष्प्रभाव बताया गया है।

2. प्रद्युम्नचरित : इसमें श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जीवन चरित है।

3. यशोधरचरित : यशोधर के आख्यान को आठ सर्गों में विभक्त किया है।

4. गुर्वावलि : इसमें अपने संघ के पूर्वाचार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया है। गुर्वावलि संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखी गयी है।

राजस्थानी रचनाएँ :

1. यशोधर रास : यह एक प्रबन्ध काव्य है। कवि ने इसमें प्रबन्ध काव्य के समस्त गुणों का समावेश किया है। समस्त काव्य 10 सर्गों में विभक्त है।

2. त्रेपन क्रियागीत : इस गीतिकाव्य में श्रावक के पालन करने योग्य त्रेपन क्रियाओं का वर्णन किया गया है।

3. ऋषभनाथ की धूलि : यह एक प्रबन्धकाव्य है और इसमें आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ के जीवन-चरित का वर्णन चार सर्गों में किया गया है।